''राजस्थान में ब्लॉक छपाई का अध्ययन विशेषकर सांगानेर व बगरू के संदर्भ में''

*डॉ. गीता सिंह
**कंचन

शोध सारांश

राजस्थान जैसे विशाल राज्यों में जहाँ भौगोलिक परिस्थितियाँ बहुत भिन्न है, जातियाँ अनगिनत हैं तथा सर्वाधिक वैविध्य दिखाई पड़ता हैं। जितने रंग और ड़िजाइन हमको राजस्थान की परम्परागत वेशभूषा में दिखाई पड़ता हैं। उतने अन्यत्र कहीं नज़र नहीं आते।

ब्लॉक छपाई राजस्थान का प्राचीन ''शिल्प रूप'' रहा है जो राजस्थान में प्राचीन काल से प्रचलित है। यहाँ प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर ब्लॉक छपाई की जाती हैं।

पाश्चात्य विद्वानों का मानना हैं कि भारत में ठप्पे की छपाई पद्धति बाहर से आई थी। ई.डी. हैवेल स्मिथ के अनुसार ठप्पों से वस्त्रों की छपाई की तकनीक चीन से मध्य एशिया एवं ईरान होते हुए मुसलमानों के साथ भारत आई थी। बाणभट्ट वस्त्र की छपाई के लिये संयुक्त ठप्पे का उल्लेख ''रूप'' शब्द से करता हैं।

राजस्थान में ब्लॉक छपाई

देश के विभिन्न हिस्सों में ब्लॉक छपाई कि विभिन्न शैलियाँ विकसित हुई हैं। जिसमें राजस्थान भी इसका एक प्रमुख केन्द्र रहा हैं। राजस्थान में देवी–देवताओं, पशु–पक्षियों विभिन्न जानवरों के रंगीन ब्लॉक छपाई प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान में ब्लॉक छपाई के प्रमुख केन्द्र सांगानेर, बगरू, बाड़मेर, जोधपुर, उदयपुर आदि हैं।

राजस्थान में छपाई के विभिन्न केन्द्र

''बाड़मेर'' अपने नीले काले आउटलाइन के साथ लाल मिर्च की छपाई के लिये प्रसिद्ध है। ''उदयपुर'' में चप्पल की लकड़ी का प्रयोग कर विशेष प्रकार के ब्लॉक बनाये जाते हैं, तथा फिर उनसे छपाई की जाती है तथा यहाँ कि डिजाइन श्रीनाथ जी तथा भगवान श्री कृष्ण से संबंधित हैं। ''जोधपुर'' कि ब्लॉक छपाई में नाखूनों का विशेष महत्व हैं। इन नाखूनों से कपड़े के मुड़े हुये तथा उसके बाद कपड़े के उभरे हुए बिन्दु को प्रतिरोध पेस्ट के साथ लेपित करके तार से बाँधा जाता हैं। फिर उसे रंगा जाता हैं।

बगरू

जयपुर शहर से दक्षिण–पश्चिम दिशा में अजमेर रोड़ पर लगभग 30 कि.मी. दूर एक छोटा सा कस्बा है। जो ब्लॉक छपाई के लिये प्रसिद्ध है तथा बगरू छपाई को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाने वाले छींपा समुदाय की इस कस्बे में बहुलता हैं। छींपा समुदाय के लोग सदियों से प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर छपाई कार्य करते हैं।[8]

बगरू में दो तरह की छपाई प्रसिद्ध है – 1. ब्लॉक छपाई 2. दाब्बु छपाई

''ब्लॉक छपाई''

ब्लॉक छपाई विशेषकर भारत के दो राज्यों गुजरात व राजस्थान (बगरू एवं सांगानेर) में प्रसिद्ध हैं। ''ब्लॉक'' यह एक लकड़ी का हत्था होता हैं। जिसे ''सांजु'' कहते है। इस हत्थे पर पहले कारीगरों द्वारा आकृति को ढ़ाला जाता है तथा फिर उस हत्थे पर रंगों का प्रयोग कर उसे कपड़े पर छापा जाता है इसे हि ''ब्लॉक छपाई'' कहा जाता हैं।

छपाई के लिये उपयुक्त ब्लॉक

''दाब्बु छपाई''

कपड़े को अतिरिक्त एवं अनावश्यक छपाई से बचाने के लिये दाब्बु तकनीक का इस्तेमाल किया जाता हैं। ''दाब्बु'' यह एक प्रकार का पेस्ट होता है जो काली मिट्टी, लकड़ी का बुरादा, गेहूँ का बुरादा, चुना इत्यादि को मिलाकर बनाया जाता हैं, फिर इस पेस्ट को लकड़ी के ब्लॉक एवं स्क्रीन ब्लॉक द्वारा कपड़े पर छपाई की जाती है। इसे ही ''दाब्बु छपाई'' कहते हैं।

दाब्बु पेस्ट

दाब्बु छपाई

सांगानेर

सांगानेर जयपुर शहर से लगभग 8 कि.मी. दक्षिण–पूर्व में स्थित हैं। सांगानेर में छपाई तकनीकी 16वीं और 17वीं शताब्दी के बीच विकसित हुई थी। मुगलों व मराठों के बीच लगातार युद्ध के कारण कई कारीगर गुजरात से राजस्थान आ गये तथा इन्हीं कारीगरों ने सांगानेर में इस छपाई तकनीक को विकसित किया था। ये सभी कारीगर एक ही समुदाय के थे। जो मुख्यतः छींपा समुदाय माना जाता हैं।

सांगानेरी छपाई के डिजाइनों में विभिन्न प्रकार के फूल जैसे गुलाब, सूरजमुखी आदि शामिल हैं। फूलों के अलावा विभिन्न देवताओं, फलों, लोकदृश्यों को दर्शाने वाले डिजाईन भी शामिल हैं।

सांगानेर अपने ''कैलिको'' मुद्रित बेड कवर, रजाई और साड़ियों के लिये लोकप्रिय हैं। ''कैलिको'' प्रिंटिंग में रूपरेखा पहले मुद्रित की जाती हैं और फिर रंग भरा जाता हैं। इसमें बोल्ड पैटर्न व रंगों को अत्यधिक पसंद किया जाता हैं। एक और लोकप्रिय तकनीक ''डू रूखी'' छपाई हैं। जिसमें कलाकार कपड़े के दोनों और प्रिंट करते हैं।

निष्कर्ष

राजस्थान भारत का छपाई का सर्वाधिक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा हैं। चमकीले रंगों का आकर्षण राजस्थान के लोगों के दिलों में अभी भी बहुत महत्व रखता हैं। राजस्थान के लगभग सभी भागों में छपाई होती हैं। हालांकि संसाधनों की कमी व मांग की कमी कि वजह से कई केन्द्रों में अब छपाई कार्य बंद हो गया हैं। परंतु बगरू व सांगानेर जैसे छपाई के प्रमुख केन्द्रों की वजह से राजस्थान भारत की सभी सीमाओं से आगे हैं। राजस्थान की अन्य छपाई शैलियों में ''दाब्बु'' (बगरू) छपाई का भी महत्वपूर्ण स्थान है जो बगरू में की जाती हैं।

लेकिन वर्तमान समय में छपाई की मशीनीकृत प्रणालियों की शुरूआत की वजह से हाथ ब्लॉक छपाई के उद्योगों को गहरा झटका लगा। अधिकांश छपाई केन्द्रों पर स्क्रिन छपाई हाथ की ब्लॉक छपाई से आगे निकल गई है तथा प्राकृतिक रंगों की जगह रासायनिक रंगों का प्रयोग करने लगे हैं। इन सबकी वजह से हाथ की ब्लॉक छपाई वाले उद्योगों को भारी क्षति उठानी पड़ रही हैं।

***प्रोफेसर (इतिहास)**
मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
प्रबंधन एवं मानविकी संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
****शोधार्थी (इतिहास)**
मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
प्रबंधन एवं मानविकी संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

संदर्भ सूची

1. राजस्थान की बहुरंगी वस्त्र परम्परा – गुलाब कोठारी, पब्लिकेशन जयपुर प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड़ –1995, पृ. सं. 02
2. राजस्थान की बहुरंगी वस्त्र परम्परा – गुलाब कोठारी, पब्लिकेशन जयपुर प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड़ –1995, पृ. सं. 14
3. राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश की छपाई कला का सर्वेक्षण – डॉ. आशा भगत, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली–110002, पृ. सं. 01
4. राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश की छपाई कला का सर्वेक्षण – डॉ. आशा भगत, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली–110002, पृ. सं. 02
5. राजस्थान की बहुरंगी वस्त्र परम्परा –गुलाब कोठारी, पब्लिकेशन जयपुर प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड़ –1995, पृ. सं. 19
6. Costume Textile and Jewellery of India (Tradition in Rajasthan) - Vandana Bhandari
7. www.craftandrajasthan.com/Hand Blocking Printing
8. www.pinkcity.com/Bagru Jaipur
9. Self Collected Information from Bagru Printers - छींपा समुदाय
10. www.utsavpedia.com
11. Jaipur City Post www.press.com. - Sanganeri Block Printing